भगवतीशरण मिश्र

बिहार के तीर्थ

(2)

बिहार के तीर्थ-II

डा० भगवतीशरण मिश्र

समाज-शिक्षा प्रकाशन

मूल्य : बारह रुपये (12.00)
संस्करण : 1986 © प्रकाशक
समाज शिक्षा प्रकाशन, 2702, लोथियान रोड,
कश्मीरी गेट, दिल्ली-6 द्वारा प्रकाशित
BIHAR KE TIRATH (Stories)
by Dr. Bhagwati Saran Mishra
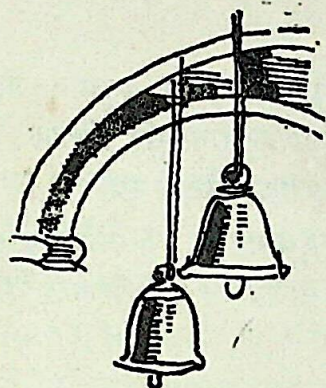
पटना के कुछ और मंदिर

पटना बिहार की राजधानी है। अतः, स्वाभाविक है कि यहाँ अधिक ही प्रसिद्ध मंदिर हों। पिछले पृष्ठों में बताये गए मंदिरों के अलावा यहां कुछ और दर्शनीय स्थान हैं।

गंगा किनारे कई शिव मंदिर हैं। बांस घाट पर शिव के साथ-साथ एक राम मंदिर भी है। यहीं हनुमान जी की दो बड़ी मूर्तियां भी हैं। गुजरा घाट पर भी शिव मंदिर है।

राजापुर पुल के पास कई मंदिर हैं। इनमें राधा-कृष्ण प्रणाली मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। थोड़ी दूर आगे एक बड़ा राम-मंदिर है। यह एक विशाल प्रांगण में है।

पटना सिटी में छोटी पटन देवी के मंदिर के पास ही काली जी का एक प्राचीन स्थान है। दरभंगा हाउस के घाट पर भी काली जी का एक मंदिर है जिसकी मूर्ति बड़ी भव्य है।

सब्जी बाग के आस-पास बिड़ला मंदिर है। दलदली रोड में काली जी की मूर्ति दर्शनीय है।

बेली रोड में एक चिड़ियाखाना के पास हनुमान जी की एक बड़ी मूर्ति है। इतनी बड़ी हनुमान मूर्ति लेखक ने अब तक कहीं नहीं देखी है। यह एक दर्शनीय स्थान है।

पटना सिटी में ही काले हनुमान जी का मंदिर है। इनकी पूंछ कटी हुई है। इसके सम्बंध में कई किंवदंतियां हैं।

पंच मंदिर

सर्पेन्टाइन रोड पर नया सचिवालय के आस-पास पंच मंदिर का प्रसिद्ध स्थान है। यह मन्दिर बिहार के प्रसिद्ध संत रूपकला जी की स्मृति में बना है। इसका उद्घाटन रूपकला जी के शिष्य दिव्यकला जी ने किया था। इस मन्दिर में राम, लक्ष्मण और जानकी की मूर्तियां हैं। हनुमान की भी मूर्ति है। इन मूर्तियों का बड़ा मनोहारी शृंगार होता है।

मन्दिर में एक तरफ रूपकला जी और दिव्यकला जी की प्रस्तर मूर्तियां हैं। एक ओर वल्लभ शरण जी और वेदान्ती जी की मूर्तियां हैं। ये दोनों अयोध्या के प्रसिद्ध संत रहे हैं। दोनों रूपकला जी के समकालीन थे।

शिव, पार्वती, गणेश की भी मूर्तियां मन्दिर के दूसरे भागों में लगी हैं। यह एक चमत्कार-पूर्ण स्थान है। यहां लोगों की मनोकामनाएं चमत्कारिक ढंग से पूरी होती हैं।

जो भी यहां नियमित जाता है उसका कल्याण होकर रहता है। यह लेखक का अनुभव तो है ही उसके कई मित्रों का भी है। लगता है संत रूपकला जी की आत्मा का यहां साक्षात् निवास है।[1] रूपकला जी ने अपने जीवन-काल में भी कई लोगों का कल्याण किया है। अब भी कर रहे हैं।

सबलपुर का विष्णु-मंदिर

मालसलामी से पूर्व फतुहा की ओर जो सड़क गई है उसी पर सबलपुर गांव में यह विष्णु मन्दिर है। इसमें जो शिल्प सम्बन्धी काम है वह देखने योग्य है। यहां गंगा उत्तर वाहिनी है। इसीलिए यहीं यह मन्दिर बनाया गया। कम से कम बिहार में ऐसा भव्य विष्णु मन्दिर और कहीं नहीं हैं। यह कोई पौने दो सौ वर्ष पुराना है। मन्दिर में फूल-पत्ते भी खूब लगे हैं। इसे बाबू मनोहर लाल उपाध्याय ने बनवाया था।

म्लेच्छ मर्दिनी-दरभंगा

दरभंगा के मिर्जापुर मुहल्ले का यह देवी-मन्दिर एक सिद्ध स्थान है। यहां के लोगों की मान्यता है कि जो कोई

1—रूपकला जी के संबंध में लेखक की बच्चों के लिए पुस्तक 'हमारे होनहार' में भी लिखा गया है।

भी यहां भक्ति भाव से आता है उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती है।

इस मन्दिर में देवी की एक बड़ी सुन्दर मूर्ति है। वह काले पत्थर की बनी है। इसी में ऊपर नृसिंह और नीचे दायें-बायें गणेश और कार्तिकेय की भी मूर्तियां हैं। कपड़े से ढंके रहने के कारण ये मूर्तियां दिखाई नहीं पड़तीं।

यह मूर्ति यहीं के एक तालाब में आज से तीन सौ वर्ष पूर्व मिली थी। इसकी भी एक कहानी है। यहां उस समय दुर्भाग्यवश हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच भारी दंगा हुआ। उसमें बहुत से लोग मारे गए। मुसलमानों ने मुकदमा किया।। सरकार की ओर से तालाब में जाल डाला गया क्योंकि बहुत लाशें लोगों ने तालाब में ही डाल दी थीं। जाल में कोई लाश नहीं मिली। पर यही मूर्ति जाल में आ फंसी। लाश नहीं मिलने से लोग मुकदमा जीत गए। तभी से इस मूर्ति की पूजा करने लगे।

यहां का पुराना मन्दिर अब नहीं रहा। वह जीर्ण-शीर्ण हो गया था। मंदिर लगता भी नहीं था। एक साधारण-सी छत के नीचे एक हाल-सा था। भक्तों ने आज से 89 वर्ष पहले इस मन्दिर को तोड़ कर एक नया और आकर्षक मन्दिर बना दिया। यह इधर का सबसे ऊंचा मन्दिर है। दूर से ही दिखाई पड़ता है। इसमें एक बड़ा और दो छोटे गुम्बज हैं। कारीगरों ने गुम्बज में अच्छी कारीगरी की है।

म्लेच्छ मर्दिनी[1] का मन्दिर दरभंगे में पहले भी बहुत प्रसिद्ध था। जब से नया मन्दिर बना तब से इसकी प्रसिद्धि और बढ़ गई। लोग दूर-दराज से इस मन्दिर में पूजा करने और मनौतियां मनाने आते हैं।

दरभंगा एक प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन है। यह उत्तर बिहार में है। यहां बसों से भी जाते हैं। यह पहले जिला मुख्यालय था। अब यहां प्रमंडल कार्यालय भी हो गया है।

दरभंगा में म्लेच्छमर्दिनी के अलावा कई और प्रसिद्ध मन्दिर हैं।

राज-अहाते में 'कंकालिनी' देवी का मन्दिर है। इसी देवी ने दरभंगा नरेश को राज्य दिलवाया था। जहाँ आज संस्कृत विश्वविद्यालय है वहीं एक हनुमान जी का लघु मन्दिर है। यह पूरा-का-पूरा मन्दिर संगमरमर का बना है। पूरा-का-पूरा ही यह जयपुर से बन कर आया था।

राज हाता में ही कई मन्दिर हैं। श्यामा का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। मूर्ति काफी बड़ी और भव्य है। यहीं पर तारा का मन्दिर है। अन्नपूर्णा का मन्दिर बगल में है। शिव का भी एक पुराना मन्दिर है।

लहेरिया सराय में हनुमान जी का एक प्रसिद्ध मन्दिर है। यह पुलिस लाइन में हैं। हनुमान के यहां कई मन्दिर हैं। एक मंदिर राज की चहारदीवारी में हैं। दूसरा वहीं

1—इस मंदिर के सम्बन्ध में लेखक के उपन्यास—'नदी नहीं मुड़तीं' (प्रकाशक—राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली) में विस्तार में लिखा गया है।

पर डैनबी—तालाब के किनारे हैं जो बहुत प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि राज के अंग्रेज मैनेजर डैनबी ने उस टीले को ढहाना चाहा जिस पर यह मन्दिर ह। पर टीले से इतने सर्प निकले कि उसने डर कर उसे यथावत छोड़ दिया। तब से वह अंग्रेज डैनबी भी हनुमान जी का भारी भक्त हो गया।

गरीबनाथ—मुजफ्फरपुर[1]

यह एक प्रसिद्ध शिव-मन्दिर है। गरीबों की इच्छा यहां अवश्य पूरी होती है। इसीलिए इसका नाम गरीब नाथ है। कुछ लोग कहते हैं गरीब बाबा नामक किसी साधु ने पहले यहां मन्दिर बनवाया तब से इसका नाम गरीब-नाथ पड़ गया।

यह उत्तर बिहार का अति प्रसिद्ध शिव मन्दिर है। अरेराज के बाद इसी का महत्त्व है। इसकी विशेषता यह है कि जैसे वैद्यनाथ धाम में लोग कामर लेकर जाते हैं वैसे ही यहां भी कामर में गंगा जल भर-भर लाते हैं। पहले-जा-घाट से गंगा जल लेकर लोग यहां पैदल आते हैं। यह दूरी 35-40 मील के करीब है। श्रावण के महीने में हजारों लोग कामर लिए पहले-जा से मुजफ्फरपुर की ओर जाते हुए देखे जा सकते हैं। उस समय गरीबनाथ का मन्दिर दूसरा वैद्यनाथ धाम लगता है।

1—इस मंदिर का उल्लेख मेरी पुस्तक 'बंधक आत्माएं' में भी आया है। इसके प्रकाशक हैं—प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली

मन्दिर में श्रावण में तो मेले लगता ही है, शिव रात्रियों में भी लगता हैं। हर सोमवार को यहां तिल रखने की भी जगह नहीं मिलती।

यह मन्दिर शहर के बीच में है। इसीलिए, सामने की सड़क पर काफी-भीड़ भाड़ होती हैं। मेले के समय काफी कठिनाई होती है।

मुजफ्फरपुर में गरीबनाथ के अलावा और मन्दिर भी हैं। रमना मुहल्ले में अष्टभुजा दुर्गा को बड़ी अच्छी मूर्ति है। इस मन्दिर को यहां के प्रसिद्ध रईस बच्चा बाबू ने बनवाया था। कल्याणी चौराहे पर एक छोटा मन्दिर है जिसमें कई देवताओं की मूर्तियां हैं। यहां भी अक्सर पूजा-पाठ होता है।

शिव मंदिर—कुशेश्वर स्थान
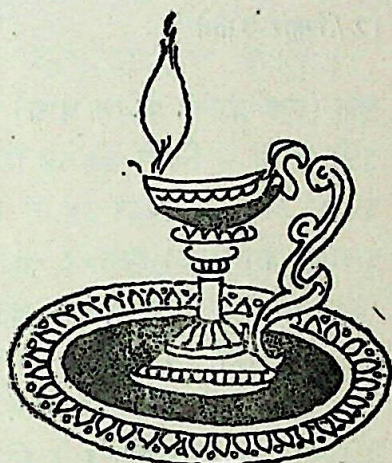
कुशेश्वर स्थान का मन्दिर दरभंगा जिला में है। दरभंगा से यहां पक्की सड़क जाती है। पर यह स्थान काफी भीतर जाकर है। पहले यहां पहुंचना बहुत कठिन था। रास्ते का अभाव था। पर उस समय पर भी भक्त लोग यहां जाते ही थे। इसी से स्थान का महत्त्व सिद्ध होता है। अब तो पक्की सड़क हो जाने से यहां काफी लोग जाते हैं।

मन्दिर का प्रांगण बहुत भव्य है। मुख्य दरवाजा काफी आकर्षक है। शिव और पार्वती के मन्दिर, प्रांगण में दो तरफ स्थित हैं। दोनों के शिखर वैद्यनाथ मन्दिर की तरह लाल कपड़े की चुन्नियों से जुड़े रहते हैं।

मन्दिर में यों तो लोग नित्य दर्शन को जाते हैं। पर श्रावण में यहां खूब भीड़ होती है। सोमवार और शिव-रात्रियों को काफी लोग जाते हैं।

कुशेश्वर स्थान। इस स्थान का क्यों नाम पड़ा, नहीं कहा जा सकता। ऐसा लगता है कि इस इलाके में कभी

कुश (एक जंगली पवित्र घास) का जंगल हुआ करता था । इसी जंगल में किसी को यह शिव-लिंग मिला । इसीलिए, इसका नाम कुशेश्वर स्थान पड़ा। कुशेश्वर स्थान का इलाका जंगलों का इलाका रहा भी है। आज भी इधर बहुत बाढ़ आती है। जहां-जहां पानी जमता है वहां-वहां घास-फूस उग आते हैं।

दरभंगा से कुशेश्वर स्थान जाने के लिए बसें मिलती हैं। लोग अपनी गाड़ियों से भी जाते हैं। सड़क की हालत कभी-कभी बहुत खराब रहती है। यहां एक सरकारी डाक बंगला भी है जहां ठहरने की अच्छी सुविधा है। यहां का प्राकृतिक दृश्य बहुत लुभावना है।

कपिलेश्वर स्थान

उत्तर बिहार में, मधुबनी-दरभंगा रोड पर कपिलेश्वर स्थान है। यहां शिव का पुराना मन्दिर है। कहते हैं यहां पहले कपिल मुनि का आश्रम था। पर इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता।

कपिलेश्वर स्थान एक छोटी जगह है। सड़क के ठीक किनारे बसे इस कस्बे में दो-एक पक्के घर हैं। शेष मिट्टी और छप्पर के।

मन्दिर में एक ओर शिव और दूसरी ओर पार्वती का मन्दिर है। शिव मन्दिर कुछ गहराई में है। शिवलिंग काफी पुराना होने के कारण घिस-सा गया है। पार्वती मन्दिर ऊंचाई पर है।

सामने की सड़क पर बसें चलती हैं। अतः आवागमन की काफी सुविधा है। जो लोग सड़क से अपनी गाड़ियों से गुजरते हैं उनमें भी अधिकांश यहां रुक कर शिवपार्वती के दर्शन करते हैं। मन्दिर अक्सर खुला रहता है। इसलिए यात्रियों को कोई असुविधा नहीं होती।

यहां पंडों के यहां ठहरा जा सकता है। मिठाइयों और चूरा-दही की दुकानें भी यहां है। दूकानों पर भी रात काटी जा सकती है। जो लोग यहां ठहरना चाहें वे मधुबनी या दरभंगा जाकर ठहर सकते हैं।
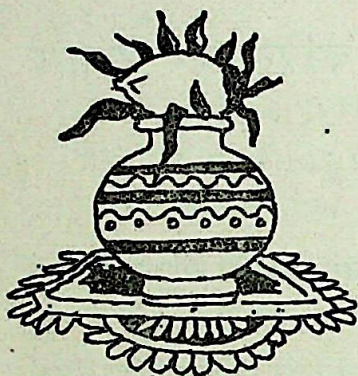
विद्यापति नगर

यह स्थान उत्तर बिहार में है। यहां इसी नाम का एक रेलवे स्टेशन भी है। मुजफ्फरपुर लाइन पर यह स्थान पड़ता है। यहां तक सड़क भो जाती हैं।

इस स्थान का नाम प्रसिद्ध मैथिल कवि विद्यापति के नाम पर पड़ा है। विद्यापति कवि होने के साथ-साथ एक प्रसिद्ध शिव भक्त भी थे। उन्होंने शिव सम्बन्धी कई स्तोत्र लिखे हैं। इन्हें नाचारी कहते है। कहा जाता है कि शिव इनके यहां नौकर बन कर रहते थे। उस नौकर का नाम उगना था। एक बार जब भेद खुल जाने पर उगना भाग गया तो विद्यापति बहुत रोये और एक कविता बनाई— उगना रे मोर कतो गेला।

कहते हैं विद्यापति अक्सर गंगा-स्नान को जाते थे। जब उनकी मृत्यु करीब आई तो ये गंगा की ओंर चले। रास्ते में थक गए। वहाँ से आगे बढ़ना मुश्किल था। लाचार वहीं ये गंगा की स्तुति करने लगे। सतोत्र बनाते जाते और रो-रो कर प्रार्थना करते जाते। फल यह हुआ कि गंगा को वहीं आना पड़ा। गंगा की उफनती तंरगे वहां

तक आ गई और कवि को अपने में समेट लिया। विद्यापति गंगा लाभ कर गए।

जिस स्थान पर गंगा और कवि का यह मिलन हुआ वहीं विद्यापति नगर बसा है। स्थान छोटा पर मनोरम है। यहां कवि का एक 'स्मारक' है जो साधारण है। एक पुराना पेड़ भी है जो उसी समय का बताया जाता है।

जिन लोगों को विद्यापति और शिव से प्रेम है वे यहां अवश्य जाते हैं। यहीं खाने ठहरने की साधारण सुविधा है।

दरभंगा मुजफ्फरपुर सड़क पर होने से यहां बस एवं कार से जाने की भी सुविधा है।

बिहार शरीफ

यह मुसलमानों का एक बड़ा तीर्थ है। प्रसिद्ध इस्लामी संत मखदुम बिहारी की यहां मज़ार है। मखदुम बिहारी ने बिहिया के जंगलों में 12 वर्ष तक तपस्या की थी। फिर वे राजगृह गये थे। वहां आज भी वह कुंड है जिसके किनारे इन्होंने कुछ दिनों तक तपस्या की थी। इसे अब मखदुम कुंड बोलते हैं। मुसलमान भक्त इस कुंड में भक्तिपूर्वक स्नान करते हैं।

बिहार शरीफ में इनकी मज़ार काफी बड़ी है। भारत भर के लोग यहां आते हैं। मनौतियां मनाते हैं और चादरें चढ़ाते हैं।

बिहार शरीफ में मुसलमानों की घनी आबादी है। कहा जाता है कि इस स्थान का नाम मखदुम बिहारी के नाम पर ही बिहार शरीफ पड़ा।

बिहार शरीफ पटने से कोई 60 मील की दूरी पर है। यहां तक बड़ी अच्छी पक्की सड़क जाती है। यहां खाने रहने का अच्छा प्रबन्ध है ।
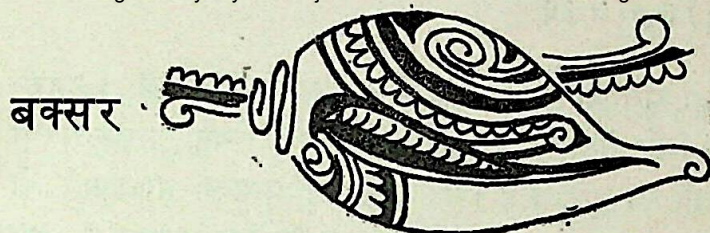
बक्सर

बक्सर गंगा नदी के किनारे बसा है। मुगलसराय से हावड़ा की लाइन का यह एक प्रमुख स्टेशन है। यह भोजपुर जिले का एक अनुमंडल है। स्टेशन पर तांगे और रिक्शे मिलते हैं। एकाध टैक्सियां भी मिल जाती हैं। मुख्य नगर स्टेशन से थोड़ी दूर पर है।

बक्सर एक बड़ा तीर्थ है। इसका पौराणित महत्व है। रामायण में भी इसका उल्लेख है। भगवान राम ने ताड़का राक्षसी का बध यहीं पर किया था।

आज के बक्सर में ये सभी स्थान दिखलाये गए हैं। कल्पना से ही सही ताड़का आदि की मूर्तियां बनाई गई हैं। विश्वमित्र की हवन-वेदी है। उस घाट को भी दिखलाया गया है जिसका उपयोग विश्वामित्र और राम-लक्ष्मण ने किया था।

यहां हनुमान जी का भी एक अच्छा मंदिर है। इसमें पंचमुखी हनुमान हैं। कहा जाता है कि लोगों की मनोकामनाएं यहाँ पूरी होती है। लेखक के एक साथी की एक भारी बीमारी इनकी कृपा से छुटी थी।

यहाँ राम जानकी के एक दो बड़े अच्छे मंदिर है । ठहरने के लिए होटल और धर्मशालाएं भी है । यहाँ सड़क से भी जाने की सुविधा है । पटना, आरा अथवा वाराणसी से यहाँ सड़क द्वारा जा सकते है । कुछ वर्षों पहले इधर गंगा पर पुल बन जाने से वाराणसी जाना आसान हो गया है ।

बक्सर का जितना महत्व है, उतना इसका विकास नहीं हो पाया है । पर्यटन की दृष्टि से इसका विकास होना चाहिए था । बिहार या भारत सरकार को इसके लिए कुछ करना चाहिए ।

बक्सर का ऐतिहासिक महत्व भी है ।बक्सर के पास ही हुमायूं और शेरशाह की लड़ाई हुई थी जिसमें शेरशाह की जीत हुई थी । हुमायूँ ने गंगा में कूद कर अपनी जान बचाई थी । एक भिश्ती ने उसके प्राणों की रक्षा की थी । ऐसे महत्वपूर्ण स्थान का विकास नहीं होना खलता है ।

बक्सर में गंगा-स्नान का महत्व है । बिहार का यही एक शहर है जहाँ के गंगा स्नान को पवित्र माना जाता है । पटना मगध में है, अतः वहाँ गंगा का महत्व नहीं है । पटना के गंगा-जल का भी कोई महत्व नहीं । बक्सर का गंगा-जल लाते हैं । यही कारण है कि हर गंगा-स्नान के अवसर पर बक्सर में भारी भीड़ लगती है । चाहे वह संक्रान्ति का समय हो, ग्रहण का हो या पूर्णिमा अथवा शिव रात्रि का, यहाँ खूब भीड़ जमा होती है । यह एक तीर्थ-नगर है । इसी कारण इसका औद्योगिक और व्यावसायिक विकास नहीं के बराबर हुआ है ।

बक्सर में इधर कुछ उच्च शिक्षण-संस्थाएं भी खुल गई हैं। पहले यहाँ कालेज नहीं था। अब हो गया है।

यहां यू० पी०, बिहार और बाहर के भी तीर्थ-यात्री आते हैं। राम-भक्तों की यह प्रमुख तीर्थ स्थली है।

ब्रह्मपुर

ब्रह्मपुर एक कस्बा है। मुगलसराय-हावड़ा मुख्य लाइन पर रघुनाथपुर एक स्टेशन है। ब्रह्मपुर इसके बहुत समीप है। यह भौजपुर जिले में पड़ता है। सड़क से भी यहां जाने की सुविधा है।

ब्रह्मपुर में शिव-मन्दिर है। यहां के शिव-मन्दिर की विशेषता यह है कि यहां का शिवलिंग विशाल है और मन्दिरों में इतना बड़ा शिवलिंग नहीं मिलता है।

इस मन्दिर के सम्बन्ध में किंवदंती है कि रातों-रात इसका दरवाजा एक दिशा से दूसरी दिशा में बदल गया था। इससे मन्दिर का महत्व सिद्ध होता है।

ब्रह्मपुर से गंगा नदी समीप है। यहां शिवरात्रियों में भीड़ होती है। महाशिवरात्रि को यहां बड़ा मेला लगता है।

ब्रह्मपुर में ठहरने आदि की खास सुविधा नहीं है। रघुनाथ पुर से यहां जाने के लिए सवारियां मिलती हैं। भक्त, समीप-पास से आते हैं और दर्शन कर घर चले जाते

है । जिनको रुकने की आवश्यकता पड़े वे आरा में रुक सकते है । आरा, भोजपुर जिले का मुख्यालय है । वह यहां (रघुनाथपुर) से दो-तीन स्टेशन बाद में ही पड़ता है ।

ब्रह्मपुर के शिव-मन्दिर का दूर-दूर तक प्रचार हैं । जो लोग बक्सर या बाराणसी नहीं जा पाते वे ब्रह्मपुर ही जाते है । मेला के समय तो लोग शिव के दर्शन अवश्य करते हैं । 'एक पंथ दो काज' सिद्ध होता है ।
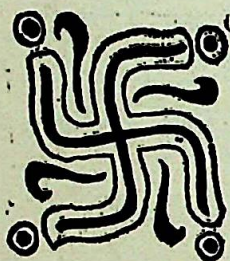
खुदनीश्वर महादेव —मुसलमानों और हिन्दुओं का सम्मिलित तीर्थ

यह स्थान समस्तीपुर के पास है। वहाँ से इसकी दूरी 7-8 किलोमीटर ही होगी। समस्तीपुर उत्तर बिहार का एक प्रमुख स्थान है। यह रेलवे जंक्शन है। सड़क से भी यहां जाने की सुविधा है। यहां अब जिला कार्यालय हो गया है। पहले यह दरभंगा जिला का एक अनुमंडल था।

खुदनीश्वर महादेव की एक विशेषता है। यहां एक ही मन्दिर में एक तरफ शिवलिंग है और दूसरी तरफ एक मज़ार। ठीक एक ही छत के नीचे आमने-सामने मज़ार और शिवमूर्ति है। पूजा-पाठ करने वाले एक ही साथ दोनों पर जल-फूल चढ़ाते हैं। अब तो लोग आदतवश शिवलिंग के साथ-साथ मज़ार पर भी विराव पत्र चढ़ा देते हैं।

किसकी है यह मज़ार ? यह मज़ार है खुदनी की। कौन थी यह खुदनी ? खुदनी थी एक मुसलमान-लड़की। 10-11 वर्ष की उम्र। यहाँ के वन में बकरी चराती थी। यहीं गड़ा था यह शिवलिंग। कोई पुराना मन्दिर था। अब

खंडहर हो आया था। खुदनी जंगल में बकरी चराती और इस मन्दिर में आराम करती। कभी-कभार बकरियों का दूध भी इस शिवलिंग पर चढ़ा देती। जंगल के फूल-पत्ते भी चढ़ाती।

खुदनी का अधिक समय मन्दिर में ही बीतता। बकरियां चरती रहतीं जंगल में और खुदनी करती रहती भगवान शिव की पूजा। कभी-कभी शिवलिंग को गोद में बाँधकर दोपहर की नींद भी ले लेती। खुदनी हो आई पूरी शिव-भक्ता।

बात पहुंचते-पहुंचते गांव में पहुंची। खुदनी के मां-बाप के कान भरे लोगों ने। मुसलमान होकर खुदनी शिव की पूजा करती है। काफिर बन आई यह। खुदनी पर पाबन्दी लगी। 'उधर गई तो टांगे तोड़ दी जायेगी। बकरियां दूसरी ओर चराओ।' पर खुदनी को तो शिव-भक्ति का चस्का लग गया था। वह धूम-फिर कर वहीं पहुंच जाती। बकरियों के दूध से शिव को स्नान भी करा देती।

घर वालों ने सोचा, एक ही उपाय है। इसकी भक्ति ऐसे नहीं छूटेगी। इसकी शादी कर देते हैं। लड़का भी ठीक हो गया। निकाह का दिन भी पड़ गया। बात खुदनी के कानों तक पहुंची। वह जार-बेजार रोने लगी। 'बापू मेरी शादी नहीं करो। नहीं करनी मुझे शादी।'

'तो क्या शिव की भक्ति करनी है? काफिर कहीं की। मूर्ति-पूजा करती है। वह भी हिन्दूओं के देवता की। काट कर रख देंगे तुम्हें।' बाप मारने दौड़ा।

खुदनी की आंखों की नींद हराम हो गई। उसे कुछ

उपाय नहीं सूझ रहा था। पर उसने अपनी जिद नहीं छोड़ी। शादी के लिए तैयार नहीं हुई। मां-बाप ने खूब पिटाई की। उसे एक कमरे में बन्द कर दिया। खुदनी, शिव के दर्शन को तड़पती रही। उसने खाना-पीना छोड़ दिया।

एक दिन खुदनी घर से बाहर भागने में सफल हो गई। गलती से लोगों ने कमरा खुला छोड़ दिया था। खुदनी सीधे जंगल पहुंची। शिवलिंग से सिर भिड़ा जार-बेजार रोई। हाय, उसके नहीं आने से शिवजी की हालत क्या हो गई थी ? सूखे पत्ते उनको ढंके हुए थे। खुदनी ने शिवलिंग को साफ किया। आंसुओं के जल से ही उसको स्नान कराया। अब कहां थीं बकरियां जो उनके दूध से स्नान कराती ?

पूजा-प्रार्थना कर खुदनी वहीं पड़ी रही। रात घिर आई पर वह घर गई नहीं। दूसरे दिन मां-बाप ढूंढ़ते-ढूंढ़ते पहुंचे। मालूम था खुदनी और कहां जायेगी। मियां की दौड़ मस्ज़िद तक। खुदनी को दौड़ शिवजी तक।

खुदनी को घर ले जाने की बहुत कोशिश की गई। खुदनी घर जाने को तैयार नहीं हुई। उसे घर जाकर शादी नहीं रचानी थी। बहुत कोशिश के बाद भी खुदनी तैयार नहीं हुई तो मां-बाप तंग आकर उसे वहीं छोड़ आये—'अब मरो यहीं पर खाने-पीने के बिना। ऐसी औलाद से तो बिना औलाद ही अच्छा।'

और खुदनी वहीं पड़ी रही। कई दिन और कई रात। बिना अन्न। बिना पानी। और वहीं पर प्राणन्त हो गया उसका। शिव की भक्तिन शिव-लोक चली गई। उसने भगवान की भक्ति का अनूठा उदाहरण रखा। उसके लिए खुदा और

भगवान में कोई फर्क नहीं था।

और, लोगों ने वहीं उसकी मज़ार बना दी। वहीं दफन कर दिया उसे। ठीक शिवलिंग की बगल में। जंगल तो था ही। कौन एतराज करता? बाद में लोगों ने खंडहर का उद्धार कर वहां एक अच्छा मन्दिर बनवाया। एक बड़ा पोखर बनवाया। उस पर सुँदर घाट बनवाया। पक्की सीढ़ियां बनवाई। तालाब के किनारे एक बड़ा पीपल का पेड़ भी खड़ा है। अवश्य ही खुदनी की अद्भुत शिव-भक्ति इसने अपनी आंखों देखी होगी।

आज के इस युग में जब हिन्दुओं और मुसलमान में तनाव बना रहता है। खून-खराबा होता है। खुदनीश्वर का यह अनूठा मन्दिर एक आदर्श की तरह खड़ा है। इसमें हिन्दू मुसलमान दोनों साथ-साथ पूजा करते है।

यहां शिवरात्रि के समय मेला लगता है। 'उर्स' के समय भी भीड़ होती है। खुदनी की आत्मा सब कुछ देख-देख प्रसन्न होती है। अगल-बगल अब एक-दो और मन्दिर बन गए है! शिव और हनुमान के। हम लोग जब यहां गये कई औरतें खुदनी की मज़ार और शिवलिंग की साथ-साथ परिक्रमा कर रही थीं। दोनों पर बेल-पत्र चढ़े थे।
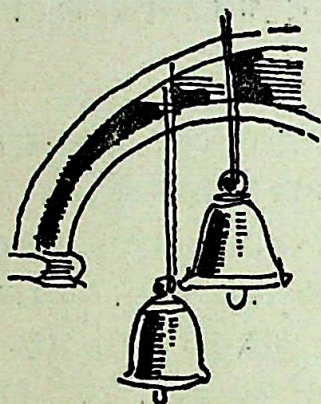
दक्षिणी भगवती-भलूनी

भलूनी, विक्रमगंज के पास है। विक्रमगंज भोजपुर जिले का एक अनुमंडल है। विक्रमगंज तक जाने के लिए आरा और सासाराम से बसें मिलती है। सरकारी भी। प्राइवेट भी। नाश्रीगंज से भी बिक्रमगजके लिए बसें मिलती हैं। बक्सर से भी। विक्रमगंज से भलूनी के लिए सीधी बस सेवा है। ताँगे से भी यहां जा सकते हैं।

भलूनी, एक गांव है। बाजार आदि यहां नहीं के बराबर हैं। पर मन्दिर की बगल में दुकानें हैं जिन पर भगवती की पूजा के सामान मिलते हैं। प्रसाद, चुन्नर और फूल-फल। नारियल तथा धूप-अगरबत्ती।

भलूनी में भगवती का पुराना मन्दिर है। बहुत ही प्रसिद्ध। बहुत जाग्रत। भगवती तत्काल मनोकामना पूर्ण करती हैं, यदि कोई भक्ति भाव से यहां जाय। गांव छोटा चाहे जो हो पर मन्दिर का महत्व खूब है। बिहार के कुछ एक जाग्रत देवी स्थानों में है यह।

यहां की देवी को यक्षिणी भी कहते है। शायद यह किसी यक्षिणी की ही मूर्ति हो। पर अब तो यह देवी के

रूप में पूजी जा रही है। पूरी तरह देवी बन आई है। या हो सकता है मूर्ति की सुन्दरता को देखकर ही लोगों ने इसका नाम यक्षिणी नाम दे दिया हो।

पर अभी जो मूर्ति है या जिस रुप में बची है वह कोई आकर्षक नहीं है। बेढंगी है। पर श्रृंगार के बाद यह खूब खिलती है। देवी के बहुत आभूषण हैं। सभी सोने के। श्रृंगार के समय इन्हें पहनाते हैं। मूर्ति चाहें जैसी हो पर देवी की शक्ति विख्यात है। दूर-दूर से लोग यहां इनके दर्शनों को आते हैं।

मूर्ति एक सामान्य से कमरे में हैं। बगल में भी कमरा है। सामने के प्रांगण में कुछ फूल-पत्ते लगे हैं। शाम को नित्य भक्ति-भाव से आरती होती है।

रोज यहां कोई न कोई बाहर से आता ही रहता है। गांव और आस-पास के लोग तो जुटते ही हैं। आरती के समय बड़ा आनन्द आता है।

यहां की बस्ती पुजारियों की ही हैं। एक-दो घरों से बढ़ते-बढ़ते पुजारियों के सैकड़ों घर हो गए हैं। सबका भरण-पोषण मन्दिर के चढ़ावे से ही होता है। इसी से ही अन्दाज लग सकता है कि मन्दिर में कितने दर्शनार्थी आते हैं। पर असल आमदनी नवरात्रियों में होती है। तब यहां भारी मेला लगता है। उसी समय की आमदनी से सैकड़ों ब्राह्मणों के घर पलते हैं।

भलूनी में होटल आदि नही होने से ठहरने वाले, पंडों के यहां ठहर सकते हैं। अधिकांश लोग रोज लौट जाते हैं, नवरात्रियों में दर्जनों ब्राह्मण यहां दुर्गापाठ करते देखे जा

सकते हैं। तब उन्हें बैठने की जगह तक मुश्किल से मिलती है। इधर के लोगों के लिए यक्षिणी-भवानी का महत्व विंध्याचल की भगवती से कम नहीं हैं। नवरात्रियों में लोग या तो विंध्याचल जाते हैं या यक्षिणी भगवती के यहां।

यहां मुंडन भी होता है। मनौतो मानने पर जिन्हें बच्चे प्राप्त होते हैं वे यहां अवश्य मुंडन कराते हैं। दूसरे भी कराते हैं। भगवती के कुछ भक्त ऐसे हैं कि वे कहीं भी रहें कम से कम नवरात्रियों में यहां अवश्य आते हैं। कुछ लोग महीने में एक बार आते हैं। आस-पास के और गांव के लोग तो रोज आते ही हैं। कुछ, एक शाम। कुछ, दोनों शाम। भलूनी की देवी साक्षात भगवती है।

सीतामढ़ी–जानकी स्थान

रामायण में राम-जानकी की कहानी है। यह पौराणिक कहानी है। कितने लोग सोचते हैं, शायद यह सच नहीं हो। यह इतिहास की बात नहीं हो। लोग समझते हैं, पुराणों की कहानियां मनगढ़न्त होती हैं।

पर रामायण के साथ बात ऐसी है नहीं। इससे सम्बन्धित सभी स्थान आज भी वर्तमान हैं। अयोध्या है, जहां राम का जन्म हुआ था। यद्यपि यह उत्तर प्रदेश में है। सीता जिसे जानकी भी कहते हैं बिहार में पैदा हुई थीं। यह बिहार का सौभाग्य है। सीता के पिता का नाम जनक था। इसीलिए सीता का एक नाम जानकी भी था। जनक की राजधानी जनकपुर थी। यह स्थान अब नेपाल में है। पर सीता जहां पैदा हुई थी वह स्थान भारत में ही हैं।

जनक, राजधानी से दूर खेत में हल जोत रहे थे। उसी समय जमीन के नीचे सीता मिली थी। हो सकता है नई-नई बच्ची को किसी ने किसी कारण किसी पात्र में रख

जमीन में गाड़ दिया हो। राजा होकर भी जनक का हल चलानें का कारण यह था कि उस समय उनके राज्य में घोर अकाल पड़ा था। ज्योतिषियों ने कहा था कि राजा अपसे हाथों हल जोतें तो पानी पड़ेगा। इसी लालच में राजा हल चला रहे थे।

तो जिस स्थान पर सीता मिली, वहीं बसा है सीता-मढ़ी। वह ठीक स्थान तो सीतामढ़ी से एक-डेढ़ किलोमीटर दूर पुनौर नामक स्थान पर है। पोखर के बीच में यह स्थान है। एक पतली सड़क पोखर में होती हुई इस स्थान तक जाती है। यहां जल के बीच एकछोटा-सा स्थान है। यह उस स्थान का सूचक हैं जहां की मिट्टी में सीता मिली थी।

सीतामढ़ी का मुख्य मन्दिर शहर के मध्य है। इसे जानकी-मन्दिर कहते हैं। यह एक भव्य और विशाल मन्दिर है। एक मारवाड़ी सेठ ने कई लाख रुपए की लागत पर इसे बनवाया था। जनकपुर में जानकी का एक नौलखा मन्दिर है। खूब बड़ा। खूब आकर्षक। पुराने जमाने में इसे बनाने में नौ लाख रुपए लगे थे।

सीतामढ़ी का यह जानकी मन्दिर जनकपुर के मन्दिर से कुछ ही कम है। अभी भी इसका विस्तार होता जा रहा है।

मन्दिर में दर्शनार्थियों की भीड़ रोज जमा होती है। पर रामनवमी के समय यहां भारी जमघट जुटता है। इस समय मेला लगता है। मन्दिर में जानकी के अलावा राम की भी पूजा होती हैं। रामनवमी का उत्सव पूरे सीता-

मढ़ी में धूमधाम से मनाया जाता है। पूरे शहर में आनन्द की लहर फैल जाती है।

सीतामढ़ी पहुंचना बहुत कठिन नहीं है। मुजफ्फरपुर से यहां नियमित बस सेवा है। भक्त लोग अपनी गाड़ियों से भी जाते हैं। यहां रेलवे स्टेशन भी है। दरभंगा—मोतिहारी लाइन का यह एक प्रमुख स्टेशन है। स्टेशन पर सवारियों की कमी नहीं है।

सीतामढ़ी एक साधारण शहर है। पहले यह एक अनु-मंडल-शहर था। अब यहां जिला मुख्यालय हो गया है। रहने-ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है। स्टेशन के अलावा होटलों और धर्मशालाओं में भी ठहर सकते हैं। सीतामढ़ी एक जाग्रत तीर्थ है।
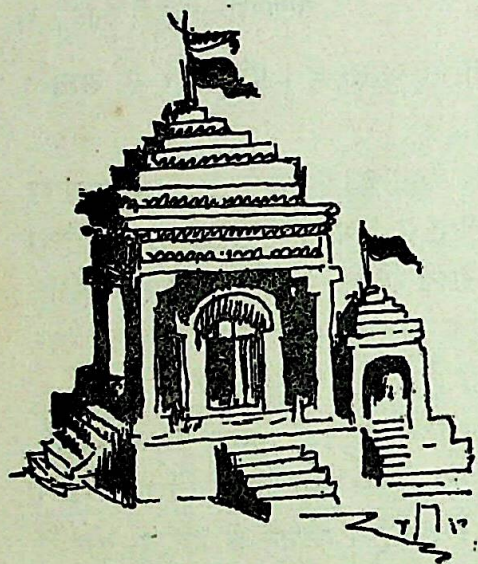
हरिहर-क्षेत्र

ग्रह और गजराज की कथा प्रसिद्ध है। ग्रह ने गजराज के पैर पकड़ लिए। वह उसे खींचकर बीच धार में ले जा रहा था। गजराज अब डूबा कि तब। उसके संगी साथी उसे खींच-खींच थक गए पर ग्रह से गजराज की पींड नहीं छुटी। जब डूबने-डूबने को हो आया तो कृष्ण की पुकारे लगाई। भगवान दौड़े आये। सुदर्शन चक्र से ग्रह का काम तमाम किया और गजराज की जान वचाई।

यह पौराणिक कहानी है। यह घटना घटी थी हरिहर क्षेत्र में। यहां गंगा और गंडक का संगम हैं। इसी संगम में ग्रह और गजराज का युद्ध हुआ था। यहां के मन्दिर में दोनों की मूर्तियां है।

यहां शिवजी का भी प्रसिद्ध मन्दिर है। विष्णु की भी मूर्ति है। कई छोटे-बड़े और मन्दिर है। यहां स्नान पूजा का बहुत महत्व है। हर पर्व पर लोग यहां जुटते है। संक्रान्ति के समय बहुत लोग संगम पर स्नान करते है। शिवरात्रियों

और ग्रहण में भी यहां आते हैं ।

हरिहर क्षेत्र में कार्तिक पूर्णिमा से मवेशियों का बहुत बड़ा मेला लगता है । यह एशिया का सबसे बड़ा मेला है । इसमें सभी प्रकार के जानवर आते हैं । हाथियों का मेला देखने ही लायक होता है । छोटे-बड़े हाथियों से लेकर हाथियों के बच्चे तक यहां देखने को मिलते है ।

मेले के समय तरह-तरह की दुकानें यहां खुल जाती है । सरकार के कई विभाग अपनी प्रदर्शनियां भी यहां लगाते हैं । तब मन्दिर में काफी भीड़ होती है । जो लोग मेला जाते है उनमें अधिकांश देवताओं के दर्शन को अवश्य जाते हैं । मन्दिरों में हुई भीड़ को नियंत्रित करने के लिए सरकार का अच्छा प्रबंध रहता है ।

हरिहर क्षेत्र सोनपुर के एकदम पास है । वहां से यहां पैदल जा सकते है । सोनपुर उत्तर रेलवे का जंक्शन है । यह गंगा के किनारे है । यहां का प्लेफार्म अपनी लम्बाई के लिए संसार में प्रसिद्ध है । सोनपुर सड़क से भी जा सकते हैं ।

हरिहर क्षेत्र में रहने का साधारण प्रबन्ध है । मेले के दिनों में लोग दुकानों और मन्दिरों में रह लेते हैं । मवेशी लाने वाले अपने तम्बुओं में रहते हैं । किन्तु सोनपुर और हाजीपुर में रहने का अच्छा प्रबन्ध है । यहां होटल हैं और डाक बंगलें भी ।

हाजीपुर का डाक बंगला गंगा के एकदम किनारे है । यह हरिहर क्षेत्र के ठीक उस पार है । यहाँ से गंगा का दृश्य बड़ा लुभावना लगता है ।

हाजीपुर में भी रेलवे स्टेशन है । अब यहां गंगा पर एक

बड़ा पुल बन गया है। यह पुल इसे पटना से जोड़ता है। इससे दक्षिण बिहार के लोगों के लिए भी इस स्थान पर पहुंचना बहुत आसान हो गया है।

हरिहर का अर्थ होता है हरि और हर का सम्मिलित स्थान। हरि का अर्थ विष्णु अथवा कृष्ण। हर का अर्थ होता है शिव। हरिहर क्षेत्र में स्नान और दर्शन से विष्णु और शिव दोनों प्रसन्न होते हैं।
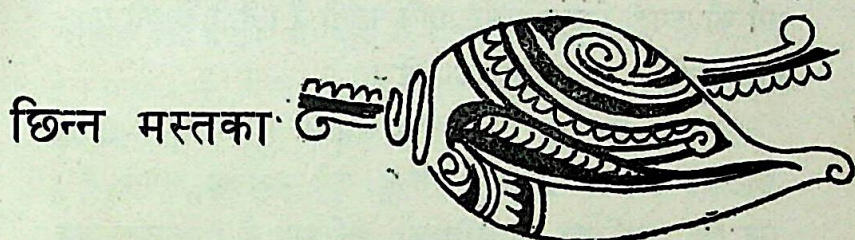
छिन्न मस्तका

छिन्न मस्तका देवी का स्थान अत्यन्त जाग्रत है। यह एक तन्त्र-पीठ है। बहुत जमाने से यहां देवी की आराधना-पूजा होती रही है। यहां बलि भी चढ़ती है। नवरात्रियों में तो इतनी बलि चढ़तीं हैं कि नदी के किनारे का पानी लाल हो जाता है।

छिन्न मस्तका देवी ने अपना सिर काट कर अपने हाथ में लिया हुआ है। ऐसी ही मूर्ति है। पत्थर को छोटी मूर्ति के ऊपर चाँदी की नक्काशीदार मूर्ति लगा दी गई है। यह चांदी की मूर्ति रात में हटा दी जाती है। सुबह सफाई के बाद इसे फिर लगा दिया जाता है।

छिन्न मस्तका का मन्दिर एक नदी के किनारे बना है। यहां का दृश्य बड़ा मनोहर हैं। सामने चट्टानों से भरी कल-कल बहती नदी भक्तों का मन मोह लेती है। इस नदी में यद्यपि पानी कम रहता है। पर धारा बहुत तेज होती है। बरसात में इसे पार करना कभी-कभी कठिन होता है।

देवी का मुख्य मन्दिर लाल रंग में रंगा है। गोलाकार है और इसमें परिक्रमा करने की सुविधा है।

मुख्य मन्दिर के अलावा अब यहाँ कई और मन्दिर बन गये है। मन्दिरों का यह एक बड़ा क्षेत्र बन गया है। कई

शिब मूर्तियां बैठ गई है । एक सूर्य मन्दिर भी है जिस पर सूर्य की उगती किरणें सबसे पहले पड़ती हैं । देवी के भी एक-दो मन्दिर है । अन्नपूर्णा का भी ।

यह स्थान ऊंचा नीचा और जंगली है । अतः, छोटे-छोटे मन्दिर जो जहां-तहां बने है बड़े अच्छे लगते हैं । यह एक इंजीनियर की बुद्धि का करिश्मा है । इसने अब सरकारी नौकरी छोड़कर यहीं अपना आवास बना लिया है । धीरे-धीरे इसने इस क्षेत्र का विकास किया है । इसे मन्दिरों का केन्द्र बना दिया है । लोग इस पूरे क्षेत्र में विचरण कर देवी-देवताओं के दर्शन का आनन्द तो लेते ही है, प्राकृतिक दृश्य का भी अवलोकन करते हैं ।

इस पूरे क्षेत्र का एक भव्य प्रवेश-द्वार है । हनुमान की एक मूर्ति प्रवेश-द्वारा के पास ही है । पर महत्व अब भी पुराने मन्दिर का है । यही छिन्न मस्तका देवी का असल मन्दिर है ।

यहाँ लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण होती है । दूर-दूर के लोग यहां आते है । बंगालियों का तो यह प्रसिद्ध तीर्थ है । लेखक के एक साथी की लड़की का विवाह नहीं हो रहा था । वह उसे लेकर वहां गये । उसी वर्ष उसका विवाह हो गया । यह अन्ध विश्वास की बात नहीं । भक्ति भावना की बात है । भगवान में विश्वास करने का अर्थ यह नहीं कि हम अपना प्रयास नहीं करें । पर प्रयास भी हो और भगवान में विश्वास भी हो तो काम जल्दी बनता है । अतः, जहां-जहाँ इस पुस्तक में यह लिखा गया है कि अमुक देवी-देवता के

यहां मनोकामना पूरी होती है, वहां-वहां यह नहीं समझना चाहिए कि लेखक भगवान में अन्ध-विश्वास करने को कहता है। नहीं। पर मेरा कहना केवल यह है कि भगवान है। देवी-देवता भी है। वे हमारी मनोकामनाएं भी पूर्ण करते है। पर इसका अर्थ यह नहीं कि हम हाथ पर हाथ रख बैठ जायेंगे तब भी वे हमारी इच्छाओं की पूर्ति करेंगे। कर भी सकते हैं, पर हम परिश्रम करेंगे तो शीघ्र पूरी करेंगे। आखिर भगवान ने हमें हाथ, पैर और बुद्धि इसीलिए तो दिए हैं कि हम उनका उपयोग करें।

छिन्न मस्तका जाने का मार्ग कठिन नहीं है। कभी था। अब यहाँ तक पक्की सड़क जाती है। रांचीरोड में रामगढ़ एक प्रसिद्ध स्थान है। वहीं से छिन्न मस्तका के लिए सड़क निकलती है। जहां पर यह मन्दिर है उसे राज-रप्या बोलते हैं। राज-रप्या का नाम उधर सभी लोग जाते है।

इस सड़क पर बस भी चलती है। लोग कारों और निजि ट्रकों, बसों से भी यहां जाते है। कलकत्ता और बंगाल के अन्य भागों के यात्री किराये की बसें करके आते हैं। नवरात्रियों में तो यहां बसों और कारों को खड़ी करने की भी जगह नहीं रहती।

राज-रप्या में छोटी-मोटी दुकानें हैं। खाने के प्रायः सभी सामान मिलते है। मन्दिर के पास की दुकानों में पूजा प्रसाद के सभी सामान मिलते हैं।

ठहरने की पूरी व्यवस्था नहीं है। सभी लोग रात में ठहरना चाहें तो कठिनाई हो सकती है। लोग राजगढ़

अथवा रांची लौट जाना चाहते हैं। पर बहुत से भक्त मन्दिर-प्रांगण और दुकानों पर ठहरते हैं। नया क्षेत्र जो बना है उससे ठहरने की सुविधा बढ़ी है।

राज-रप्पा की छिन्न मस्तका देवी अशरण-शरण है। जो चारों ओर से निराश हो जाता है वह यहां आकर अपनी समस्या का समाधान अवश्य पाता है।

थानेश्वर महादेव-समस्तीपुर

समस्तीपुर में शिव का यह एक बड़ा ऊंचा मन्दिर है। इसका प्रांगण बहुत विस्तृत है। लाल रंग में रंगा यह विशाल मन्दिर दूर से ही लोगों का ध्यान खींचता है।

समस्तीपुर को दरभंगा और पटना से जोड़ने वाली सड़क की ठीक बगल में होने से लोगों का ध्यान इस भव्य मन्दिर की ओर अवश्य जाता है। बहुत लोग अपनी कारें रोक कर यहां दर्शन को जाते हैं।

मन्दिर में शिव का एक छोटा विग्रह है। यह कुछ-कुछ जमीन में धंसा हुआ है। यहां अक्सर कोई न कोई भक्त या पुजारी पूजा करता रहता है। मन्दिर के प्रांगण में ही बेलपत्र और फल मालाओं की कई दुकानें हैं। दुकानें क्या है लोग इन चीजों को देहातों से ला-लाकर यहां बेचते रहते हैं। मिठाई की दुकानें बाहर फाटक के पास हैं। फाटक भी खूब बड़ा और आकर्षक है। दरअसल, ऐसा भव्य शिवमन्दिर बिहार में प्रायः कहीं नहीं है। देवघर में दूसरे प्रकार का है। वहां पुराने ढंग का है। देवघर एक

बड़ा तीर्थ है। धाम है। पर समस्तीपुर का यह मन्दिर शोभा में निराला है। इसको चन्दा से बनवाया गया था। इसके निर्माण में बिहार के एक बड़े नेता श्री सत्यनारायण सिंह का हाथ था। श्री सत्यनारायण सिंह केन्द्र के मन्त्री भी रहे। मध्यप्रदेश के राज्यपाल भी हुए थे। कहा जाता है कि भगवान शिव के इस मन्दिर को बनवाने के कारण ही वह इतना आगे बढ़े। श्री सत्यनारायण सिंह अब नहीं हैं।

शिव के इस मन्दिर में केवल शिव-मूर्ति ही नहीं हैं। ठीक इसी के पास एक किनारे, एक छोटे मन्दिर में हनुमान जी की आदमकद मूर्ति है। हनुमान जी कलेजा फाड़े हुए खड़े हैं। अन्दर से सीताराम की मूर्ति दिखाई पड़ रही है।

हनुमान मन्दिर की बगल में गणेश मन्दिर है।

फाटक के पास अन्दर में राम-लक्ष्मण और जानकी का मन्दिर है।

मन्दिर के सामने का बरामदा काफी विस्तृत है। बहुत लोग यहां पाठ और ध्यान में लगे रहते हैं। कुछ यात्री यहां आराम भी करते हैं।

शिवरात्रियों को मन्दिर में खूब भीड़ होती है। सोमवार को भी बहुत लोग जल चढ़ाते हैं।

श्रावण भर यहाँ मेला-सा लगा रहता है। लोग दूर-दूर से गंगाजल लाकर भी चढ़ाते हैं।

समस्तीपुर के सम्बन्ध में पीछे खुदनीश्वर के सम्बन्ध में लिखते समय लिखा जा चुका है। यहां ठहरने की पूरी व्यवस्था है। होटल आदि तो हैं ही। सरकारी डाक बंगले और सर्किट हाउस भी हैं। समस्तीपुर के पास ही से

'नेशनल हाई वे' (राष्ट्रीय प्रमुख पथ) गुजरता है जो मुजफ्फरपुर की तरफ जाता है। इसलिए भी यहां आने-जाने की बहुत सुविधा है।

समस्तीपुर का शिव मन्दिर इतना आकर्षक है कि दरभंगा के म्लेच्छ मर्दिनी मन्दिर को भी इसी के आकार का बनाने का प्रयास किया गया है, पर म्लेच्छ मर्दिनी में जगह कम होने से वहां ऐसा मन्दिर नही बन सका।

थानेश्वर मंदिर इसका नाम क्यों पड़ा, यह कहा नहीं जा सकता। स्थान काफी पुराना है। किन्तु पुराने मन्दिर का अब नामोनिशान भी नहीं है। उसी को तोड़कर यह नया निर्माण हुआ है।
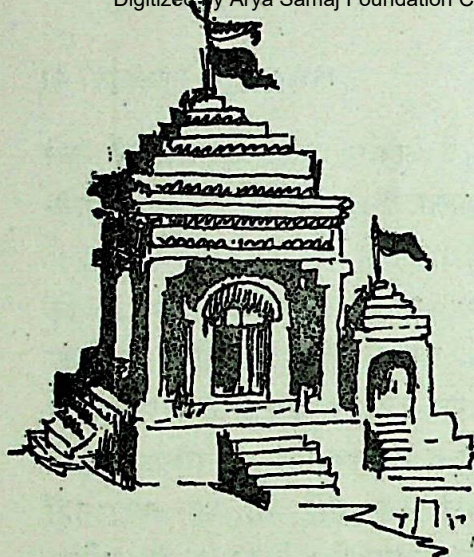
उच्चैठ—भगवती

कालिदास की कहानी बहुतों को ज्ञात है। वे पहले भारी मूर्ख थे। विद्योतमा नामक एक विदुषी महिला थी। उसने कुछ पंडितों को अपनी बुद्धि से परास्त किया। वे खार खा बैठे। प्रतिज्ञा की, विद्योतमा को ऐसी सबक सिखायेंगे कि याद करेगी।

वे इसी चिन्ता में घूम रहे थे। देखा एक लकड़हारा पेड़ पर लकड़ी काट रहा है। पर जिस डाली पर बैठा है उसे ही काट रहा है। पंडितों ने सोचा यह तो बहुत बड़ा मूर्ख है। इसी से विद्योतमा की शादी करा देते है। वह भी क्या याद करेगी ?

उन्होंने कालिदास को पेड़ के नीचे उतारा। कहा, तुम्हारा विवाह करा देते हैं, पर बोलना नहीं। लकड़हारा बहुत प्रसन्न हुआ। कहा, नहीं बोलेंगें।

उसे लेकर वे विद्योतमा के पास गए। कहा इससे शास्त्रार्थ (वहस) कीजिए। ये महान पंडित है। आजकल मौनव्रत में है। अगर आप हार गई तो इनसे विवाह करना होगा। विद्योतमा तैयार हो गई। लकड़हारे को

अच्छे कपड़े पहनाये गये थे। माथे पर तिलक लगा था। गले में माला थी। इसी कारण विद्योतमा को उसके सम्बन्ध में सन्देह नही हुआ।

शास्त्रार्थ शुरू हुआ। सवाल किया गया—'ईश्वर कितने हैं ?' चूंकि, मौन शास्त्रार्थ था, अतः विद्योतमा ने एक उंगली उठाया। मतलब ईश्वर एक है। मूर्ख कालिदास ने समझा यह मेरी एक आंख फोड़ना चाहती है। उन्होंने दो उंगलियां उठाई। अर्थात् मैं तुम्हारी दोनों आंखें फोड़ दूंगा।

पंडितों ने कालिदास का पक्ष ले लिया। कहा इनका कहना ठीक है। दो अंगुलियों का मतलब, ईश्वर दो है। साकार और निराकार। कालिदास की जीत हो गई। विद्योतमा से उनका विवाह हो गया।

विवाह होने के बाद घर के कोठे पर दोनों बात करने बैठे। कालिदास ने मौन तोड़ दिया। उनके बोलते ही विद्योतमा समझ गई कि उसके साथ धोखा हुआ है। उसने कोठे की खिड़की से इन्हें धक्का दे दिया। नीचे देवी की मूर्ति थी। उसी पर गिरे और जीभ कट जाने से उससे खून गिरने लगा। देवी प्रसन्न हो गई। कहा वर मांगो। कालिदास कुछ समझे नहीं। समझे पूछ रही है किसने ऐसा किया। विद्योतमा का पूरा नाम तो आया नहीं। केवल विद्या, विद्या बोले। देवी ने समझा विद्या मांग रहा है। बोली, गुरु के यहां जाकर आज रात भर में जितने ग्रन्थ उलटोगे सबका ज्ञान हो जायेगा। कालिदास ने यही किया।

इस तरह कालिदास, कालिदास बने। कहते हैं उच्चैठ-भगवती ही वह देवी है जिन पर कालिदास गिरे थे। इसी भगवती ने इन्हें वरदान दिया था।

यों, कालिदास को उज्जैन वाले अपने यहां का मानते हैं। ऐसी हालत में यह कहना कठिन है कि यह देवी कालिदास वाली देवी है कि नहीं। पर इधर मान्यता यही है। यह स्थान मधुबनी जिले में है। मधुबनी उत्तर बिहार का एक प्रमुख नगर है। यह अब जिला-मुख्यालय है। उच्चैठ-भगवती के यहां तक पक्की सड़क जाती है। मुख्य मन्दिर छोटा है। देवी की मूर्ति कुछ भग्न है। पुरानी होने के कारण ऐसा है। मुख्य मन्दिर के पास कुछ और मन्दिर बने हैं। एक अच्छा मंडप भी बना है। स्थान अब दर्शनीय बन गया है।

भगवती के यहां जो भक्ति भाव से पूजा करता है अथवा देवी-पाठ करता है उसे विद्या की प्राप्ति होती है, ऐसी मान्यता है।

अहल्या-स्नान

पौराणिक कहानी के अनुसार अहल्या गौतम ऋषि की पत्नी थी। किसी कारण-वश ऋषि ने श्राप दिया तो वह पत्थर हो गई। वर्षों तक यों ही पढ़ी रहीं। रामवतार हुआ। राम विश्वामित्र ऋषि के साथ जनकपुर जा रहे थे। राम का पैर जब पत्थर बनी अहल्या से टकराया तब अहल्या औरत बन आई।

यह स्थान दरभंगा जिले में हयाघाट स्टेशन के पास है। हयाघाट मधुबनी और दरभंगा के बीच एक स्टेशन है। यह उत्तरपूर्व रेलवे में है।

जहां यह स्थान है वहां एक छोटी झोपड़ी बनी है। उसमें मिट्टी का एक ढूह अथवा पींडी हैं। कहा जाता है कि यहीं अहल्या पत्थर बन कर पड़ी थी। यहां एक पुजारिन है जो इसे लिप-पोत कर रखती है।

स्थान में एक पोखर भी है। दक्षिण के एक विद्वान ने यहां कुछ खोज भी की। पोखर की मिट्टी के अन्दर उन्हें कुछ जले हुए चावल आदि मिले। इससे साबित होता है कि यहां कभी कोई आश्रम था। गौतम ऋषि का ही था

कि नहीं यह नहीं कहा जा सकता।

दक्षिण के उस विद्वान ने स्मारक रूप में यहां सीमेन्ट का एक स्तम्भ भी खड़ा किया है। इस पर पूरी की पूरी मूल रामायण[1] लिखी हुई है।

अहल्या स्थान से जनकपुर बहुत दूर नहीं है। इसी से लगता है कि यह वही स्थान हो भी सकता है।

स्थान के पास राम-जानकी का एक बड़ा और पुराना मन्दिर भी है। इसे दरभंगा नरेश ने बनवाया था। किंवदंती हैं कि इसके लिए उन्हें स्वप्न हुआ था। इससे भी लोग कहते हैं कि स्थान सही है।

स्थान एक घने बाग के बीच है। यहां का प्राकृतिक दृश्य बड़ा आकर्षक है। जहां यह स्थान है वह एक गांव की सीमा पर है। पर जीप या टांगे आदि से भी यहां जा सकते हैं। रास्ता कुछ दूर कच्चा है। पर ठीक है। कमतौल स्टेशन से भी यहां जाते है। यह भी उत्तर-पूर्व रेलवे में ही है।

दशहरा के समय यहां अधिक लोग जाते है। यों नित्य ही यहां एक-दो दर्शनार्थी आते रहते हैं।

खाने-पीने या ठहरने की यहां कोई सुविधा या प्रबन्ध नहीं है। हयाघाट में एक अच्छा डाक बंगला है। और जगह भी है। दरभंगा आकर भी ठहरा जा सकता है।

---

1. इस स्थान पर 76-77 में लेखक का लेख भी 'धर्मयुग' में छपा था।

उगना महादेव
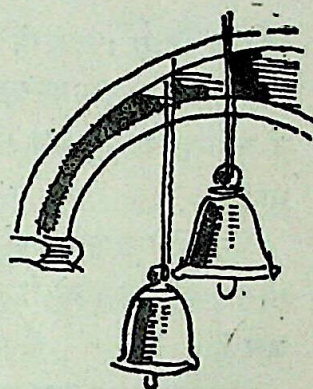
एक लेख में कहा गया है कि मैथिल कोकिल विद्यापति शिव-भक्त थे । शिवजी उनके यहां उगना नामक नौकर के रूप में रहते थे ।

एक बार विद्यापति और उगना कहीं जा रहे थे । रास्ते में मैदान ही मैदान था । गर्मी के दिन थे । कवि को जोर से प्यास लगी । आस-पास पानी का कहीं नाम नहीं । न कुंआ । न तालाब । न दूर-दूर तक कहीं कोई नदी-नाला ही । विद्यापति के प्राण निकलने-निकलने को हुए । वे उगना की ओर देखे—'कहीं से पानी ला सकते हो ?'

उगना से कवि का कष्ट नहीं देखा गया । बोलें, 'अभी लाया ।'

उगना, कवि का कमंडलु लेकर गया । थोड़ी ही देर में कमंडलु-भर जल लेकर आ गया । विद्यापति को आश्चर्य हुआ कि इतनी जल्दी जल मिला कहां । आस-पास तो कहीं है नहीं । पर अभी सवाल-जवाब का समय नहीं था । प्यास से प्राण निकल रहे थे । विद्यापति ने कमंडलु का जल पीना

आरम्भ किया। एक ही बार में सब पी गए। पर यह जल तो विचित्र था। गंगा-स्नान के आदी कवि को समझते देर न लगी। कि यह जल साधारण जल नहीं था। गंगाजल था।

उन्होंने उगना का पैर पकड़ लिया—'उगना तुम नौकर नहीं हो। बोलो तुम कौन हो। कहां पाया यह गंगा जल ?'

उगना[1] अब क्या करता ? वह पकड़ा जा चुका था। वह अपने असली रूप में आ गया। नौकर की जगह अब शंकर खड़े थे। जटा से गंगाजल चू रहा था—टप……टप ……टप।

कवि समझ गए जटा से जल निकाल दिया है शिव ने। अब तक वह उनके यहां नौकर बन खटते रहे।

विद्यापति ने शिव की बहुत प्रार्थना की। जहां शिवजी प्रगट हुए थे वहीं बना है शिव मन्दिर। इसे ही बोलते हैं उगना-महादेव। कहा जाता हैं इस मन्दिर में जो शिवलिंग है उसकी स्थापना विद्यापति ने अपने हाथों की थी। पुराना मन्दिर अब नहीं है। एक बड़ा अच्छा नया मन्दिर यहां बना है।

मन्दिर का एक आकर्षक फाटक भी है। फाटक के बाहर एक धना वृक्ष है जो स्थान की शोभा में चार चांद लगाता है।

फाटक के अन्दर दो ऊंचे म न्दिर हैं। एक शिव का,

---

1. इस विषय पर मेरा एक लेख 'कादम्बिनी' के अप्रैल, 80 अंक में छपा है। मन्दिर का चित्र भी हैं उसमें।

दूसरा पार्वती का। मन्दिर का प्रांगण बड़ा है।

यह स्थान पूर्वोत्तर रेलवे के दरभंगा लाइन पर है। यहीं पर एक छोटा स्टेशन भी हो गया है—'उगना हाल्ट'।

उगना एक छोटी जगह है। ठहरने आदि का यहां कोई विशेष प्रबन्ध नहीं है। बाहर के लोग महादेव के दर्शन कर दरभंगा या मधुबनी वापस चले जाते हैं। अपनी गाड़ी से भी यहां जा सकते हैं। मन्दिर तक पक्की सड़क जाती है।
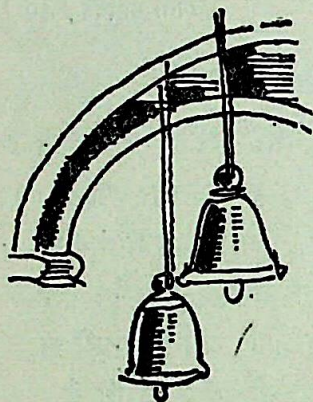
—बैशाली
जैन एवं बौद्ध तीर्थ

बैशाली बिहार का गौरव है। यहां कोई विशेष मन्दिर नहीं। पर यह जैनों एवं बौद्धों की पुण्य भूमि है। जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर जैन यहीं पैदा हुए थे। बुद्ध ने यहां बहुत दिन रह धर्मोपदेश किया था।

बैशाली में खुदाई हुई है। एक गढ़ के नीचे खाई में पूरा-का-पूरा महल मिला है। एक राजा विशाल का महल बोलते हैं इसे।

लिच्छवियों का राज्य था बैशाली में। यहां का प्रजातांत्रिक तरीका प्रसिद्ध था। कहते हैं प्रजातांत्रिक प्रणाली का पहले-पहल परीक्षण यहीं पर हुआ।

बैशाली के गढ़ पर अब प्रति वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है। इसका श्रेय मुजफ्फरपुर के तत्कालीन कमिश्नर श्री जगदीश चन्द्र माथुर को है। श्री माथुर एक प्रसिद्ध साहित्यकार भी थे।

बैशाली जाने का रास्ता हाजीपुर और मुजफ्फरपुर

दोनों जगहों से है ।

दोनों स्थानों से यह समीप है। बैशाली के लिए दोनों स्थानों से बसें मिलती हैं। हाजीपुर पटना के उस पार गंगा के किनारे है। गंगा पर यही एक बड़ा पुल बन गया है। बैशाली पहुंचना अब बहुत आसान हो गया है। बिहार सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा भी बैशाली घुमाने का प्रबन्ध है। यह प्रबन्ध पटना से भी है और मुजफ्फरपुर से भी। यह स्थान अभी बहुत अविकसित है।

आश्चर्य है कि बुद्ध और महावीर की इस लीलाभूमि को इस रूप में क्यों छोड़ा हुआ है।

बैशाली में ठहरने आदि का कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं है। बहुत लोग यहां एक साथ नहीं ठहर सकते। बाहर के लोग मुजफ्फरपुर और अब पटना लौट आते हैं।

जैन लोग काफी धनी हैं। इन लोगों ने भारत भर में कई जगहों पर कई अच्छे मन्दिर बनाये हैं। बिहार में भी पावापुरी में बनाया है। पारसनाथ की पहाड़ो पर बनाया है। बिहार से बाहर तो इनके एक-से-एक भव्य मंदिर हैं। माउंट आबू के 'दिलवारा टेम्पुल्स' तथा 'टणकपुर' के जैन मंदिर हैं विश्वविख्यात। आश्चर्य है कि किसी जैन का ध्यान इस स्थान पर क्यों नही गया जहां उनके प्रधान तीर्थं कर भगवान महावीर पैदा हुए थे। अगर ऐसा होता तो आज बैशाली की रुप कुछ और होता।

पारसनाथ पहाड़ी -जैन तीर्थ

पारसनाथ पहाड़ियों पर कुछ बड़े अच्छे जैन मंदिर है। इस स्थान का नाम पारसनाथ के नाम पर ही रखा गया हैं।

यह स्थान हज़ारी बाग जिले में है। धनबाद जाने वाली मुख्य सड़क पर 'ईसरी बाजार' नामक एक कस्बा है। उसी के पास से पारसनाथ जाने की सड़क मुड़ती है।

कुछ ऊंचाई पर चढ़ने पर ही ये मंदिर मिलते हैं। यों ये नीचे से ही दिखाई पड़ते हैं।

मंदिरों में जैंन तीर्थ-यात्रियों के रहने-खाने का भी प्रबन्ध है। यह एक प्रसिद्ध तीर्थ है। दूर-दूर के जैन यात्री यहां आते हैं।

यहां हिन्दुओं ने कुछ वर्षों पूर्व एक भारी यज्ञ भी करवाया था। स्वर्गीय इंदिरा गांधी के समय यज्ञ हुआ था। इसमें देश भर के पंडित और विद्वान आये थे। यह यज्ञ इन मंदिरों से कुछ दूरी पर हुआ था।

उसी समय से यह स्थान और प्रसिद्ध हो गया।

'ईसरी बाजार' में छोटी-मोटी दुकानें हैं। सड़क पर लगातार बसें और टैक्सियां चलती हैं। खाने-पीने का भी अच्छा प्रबन्ध है।

पारसनाथ पहाड़ी के ये मंदिर सभी के लिए दर्शनीय हैं।

उग्रतारा स्थान

यह भी एक जाग्रत देवी पीठ है। कहते है यहां सती के नेत्र गिरे थे। लोगों की मान्यता हैं कि यहां वशिष्ठ ऋषि ने तारा की उपासना की थी। देवी प्रत्यक्ष फल देती है, इसीलिए इसका नाम उग्रतारा स्थान हैं।

यह पुराने भागलपुर जिले के 'महिषी' नामक स्थान में हैं। सहरसा जंक्शन से पश्चिम कोई 10 किलोमीटर की दूरी पर यह 'महिषी' स्थान हैं।

यहां तारा के अलावा एकजटा एवं नीलसरस्वती की मूर्तियां भी हैं।

यहां पर कोई दौ सौ वर्ष पहले दरभंगा की महारानी पद्मावती ने एक विशाल मंदिर बनवाया। यही मंदिर सर्वप्रथम बना। इसके पूर्व मूर्तियों पेड़ के नीचे पड़ी रहती थीं।

कहा जाता है कि पद्मावती के पति को कुष्ठ रोग हो गया था। उसी को दूर करने के लिए उन्होंने देवी का मंदिर बनवाया।

इस स्थान का वर्णन कुछ तंत्र-ग्रंथों में भी आता है।

नीलतंत्र में इसका विस्तृत उल्लेख हैं। इससे भी लगता है कि स्थान पुराना और प्रसिद्ध है।

देवी के सिर के ऊपर एक प्रतिमा सुशोभित है। यह एक तांत्रिक गुरु की है। उसका नाम 'अक्षोभ्य' था। इसके ऊपर सर्प का फन बना हुआ है।

तीनों मूर्तियों में बड़ी कोमलता और कान्ति है। ये कुमारी रूप में हैं। इन पर सिन्दूर चढ़ाना मना है।

पुस्तकों से मालूम होता है कि इस स्थान पर और कई देवताओं के स्थान थे। कई कुंड आदि भी थे। पर अब बहुतों का पता नहीं है।

1934 के भूकम्प में इस स्थान की बहुत क्षति हुई। मंदिर की भी दुर्दशा हो गई। तालाब की भी।

दरभंगा में एक प्रसिद्ध नरेश हुए हैं—महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह। श्री रामेश्वर सिंह धार्मिक तथा देवी-भक्त थे।

कहा जाता है, स्वर्गीय सिंह भी उग्र तारा के यहां जाते थे। एक बार काशी के एक पंडित, रामेश्वर सिंह के साथ इस स्थान पर गये। महाराजाधिराज ने पंडित जी से पूछा —'ये मूर्तियां आपको कैसी लगती हैं ?'

पंडित जी अहंकारी थे। जवाब दिया—'ये देवियां तो तो नहीं हैं। देवी के दरबार की नर्तकियां लगती हैं।'

कहते हैं इस जबाब से उग्र तारा रुष्ट हो गई। पंडित जी पागल हो गए। काशी में बहुत दिनों तक विक्षिप्त बने रहे। जब कुछ ठीक हुए तो दौड़े-दौड़े फिर यहां आए। संस्कृत में श्लोक बना देवी की स्तुति की। इसके बाद ही

पूरी तरह ठीक हुए।

यह भी कहा जाता है कि महाराज को किसी ने बताया कि जहां पर ये मूर्तियां हैं, उसी के ठीक नीचे एक चमत्कारी यंत्र है। इनके मिल जाने से महाराजा की सारी मनोकामनाएं पूर्ण हो जायेंगी। महाराजा ने जमीन खोदने का आदेश दिया। किन्तु खुदाई बन्द करनी पड़ी। क्योंकि खोदने वाला अन्धा हो गया और उसकी जीभ भी बाहर निकल आई। वह मरने-मरने को हो आया।

माना जाता है कि सिद्ध तांत्रिक ने इस स्थान पर ये मूर्तियां बैठाई। 'महिषी' में खाने ठहरने का अच्छा प्रबन्ध हो या नहीं, सहरसा में हैं।

कच्ची सराय

यहां एक बहुत बड़े फकीर की मज़ार है। यह मुसलमानों का तीर्थ है।

हर बस, ट्रक और कार का ड्राइवर यहां दस-बीस पैसे अवश्य डालता है। ऐसा कोई नहीं जो नहीं डालता हो।

यह स्थान पटना से मुकामा जाने वाली सड़क पर दाहिनी तरफ है। पटना से इसकी दूरी मुश्किल से 12 किलोमोटर है।

कहते हैं कि जो भी मनौती यहां मनाई जाती है, अवश्य पूरी होती है। जो लोग रुक कर मज़ार पर पैसे नहीं डालते उन्हें झंझट का सामना करना पड़ता है।

इस फकीर के बारे में प्रसिद्ध है कि ये बड़े पहुंचे हुए थे। बाढ़ से उफनती गंगा को पार कर जाते थे।

कच्ची सराय एक गांव है। यहां ठहरने आदि का कोई प्रबन्ध नहीं। लोग यहां रुकते भी नहीं। पटना जो समीप है।